पाठ 22

# मैं पुस्तक हूँ

मैं पुस्तक हूँ, मैं तुम्हारी अपनी पुस्तक हूँ। अगर तुम मुझसे प्यार करोगे, तो बड़े बन जाओगे। मैं ज्ञान का भण्डार हूँ। मनुष्य को मनुष्य मैंने बनाया है, मनुष्य पढ़ सकता है। पशु पढ़ नहीं सकते। मुझसे प्रेम करने वाले सभी ज्ञानी बन जाते हैं। इसलिए मैं कहती हूँ कि मुझे ध्यान से पढ़ा करो, मैं यह नहीं कहती कि तुम खेला न करो खेलना भी आवश्यक है। पर पढ़ना उससे भी अधिक आवश्यक है। आज जिन्हें तुम विद्वान कहते हो उन्हें विद्वान मैंने बनाया है। आज जिन वैज्ञानिकों का नाम तुम जानते हो, उन्हें वैज्ञानिक मैंने बनाया है। मुझे पढ़कर न जाने कितने लेखक बन गए। पहले मैं उन्हें विद्वान बनाती हूँ फिर मै उन्हें लेखक बनाती हूँ, फिर वे मुझे बनाते हैं। है न मजेदार बात!

सभी विषय मेरे पास रहते हैं। कोई मुझे कहता है हिन्दी की पुस्तक, कोई कहता अंग्रेजी की, कोई गणित और कोई विज्ञान की। कोई मुझे धर्म की पुस्तक कहता है, मैं संसार के सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार हूँ। मेरा मंदिर सरस्वती का मंदिर कहलाता है।

ये विद्यालय और पुस्तकालय सब मेरे ही मंदिर हैं। मैं क, ख,ग से चलती हूँ और विश्वकोश बन जाती हूँ। मैं तुम्हारें बस्तों में भी रहती हूँ और बड़े-बड़े पुस्तकालयों में भी। पुस्तकालयों में पत्र-पत्रिकाएँ मेरी बहनें हैं।

ये सब वही काम करती हैं जो मैं करती हूँ वे भी मेरी तरह ज्ञान बटोरती हैं, और बाँट देती हैं। मैं

**शिक्षण संकेत**

- आत्मकथा विधा से परिचित कराएँ।
- जीवन में पुस्तकों का महत्व बच्चों को बताएँ।
- पुस्तकालय ले जाकर पुस्तकों की अधिक जानकारी दे।
- पुस्तक के संदेशों को जीवन में उतारने हेतु प्रेरित करें।

अमीर और गरीब में कोई अंतर नहीं करती। बस मेरी तो एक ही शर्त है, कि मुझे ध्यान से पढ़ा करो, कुछ लोग बड़े बुद्मिान होते हैं। वे मुझ पर जिल्द चढ़ाते हैं।

मुझे फाड़ा न करो जो बच्चे मुझे फाड़ते हैं वे बच्चे मुझे अच्छे नहीं लगते । इसलिए मुझे फाड़ना नहीं चाहिए।

बहुत समय पहले लोग मुझे हाथ से लिखते थे। तब मैं हस्त लिखित रूप में रहती थी। उस समय लोग मुझे लिखने में बड़ा परिश्रम करते थे। अब तो मैं छापाखानों में छपती हूँ। क्या तुम जानते हो, कि मैं तुम्हारे हाथों में क्यों आई हूँ।

मैं तुम्हारें हाथों में इसलिए आयी हूँ जिससे कि तुम मुझे पढ़कर महान बन सको।

मैं पुस्तक हूँ। तुम्हें महान बनाने वाली पुस्तक।

▸ लेखकगण

## नए शब्द

**भण्डार** = खजाना। **विद्वान** = ज्ञानी, जानकार। **लेखक** = लिखने वाला। **सम्पूर्ण** = समस्त पूरा। **विश्वकोश** = वह ग्रंथ जिसमें संसार की सभी महत्वपूर्ण बातों का विवरण हो। **अमीर** = धनी। **परिश्रम** = मेहनत। **छापाखाना** = पुस्तक की छपाई करने का स्थान। **वैज्ञानिक** = विज्ञान को जानने वाला। **मजेदार** = रोचक, आनन्द देने वाला। **पुस्तकालय** = वह भवन जहाँ अध्ययन हेतु पुस्तकों का संग्रह किया जाता है। **बटोरना** = एकत्रित करना। **हस्तलिखित** = हाथ से लिखी हुई।

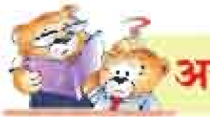

## अनुभव विस्तार

### आत्मकथा से खोजो-

**( क ) सही जोड़ी बनाइए-**

| | | |
|---|---|---|
| विज्ञान का जानकार | = | लेखक |
| लिखने वाला | = | वैज्ञानिक |
| वह स्थान जहाँ अध्ययन हेतु | = | |
| पुस्तकों का संग्रह किया गया हो | = | समाचार पत्र |
| पुस्कत का चलता फिरता भाई | = | पुस्तकालय |

**(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -**

1. पुस्तक से प्रेम करने वाले................. बन जाते है।
2. पहले मैं उन्हें ......................बनाती हूँ।
3. मेरा मंदिर .............का मंदिर कहलाता है।
4. मैं तुम्हारे हाथ में इसलिए आयी हूँ कि तुम मुझे पढ़कर .............बनो।

## 1. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

**निर्देश- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए-**

1. मनुष्य को मनुष्य किसने बनाया?
2. संसार के सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार कहाँ विद्यमान है?
3. पुस्तक किन लोगों में अन्तर नहीं करती?
4. पुस्तक को किस प्रकार के लोग अच्छे नहीं लगते ?

## 2. लघु उत्तरीय प्रश्न-

**निर्देश-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए-**

1. मनुष्य और पशु में क्या अन्तर है?
2. पुस्तक में कौन-कौन से विषय आते हैं? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।
3. पुस्तक की यात्रा कहाँ से कहाँ तक होती है?
4. पुस्तक कहाँ-कहाँ निवास करती है?
5. पुस्तक का उद्देश्य क्या है?

## भाषा की बात

**दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़े-**

मैं पुस्तक हूँ, मैं तुम्हारी अपनी पुस्तक हूँ। अगर तुम मुझसे प्यार करोगे तो बड़े बन जाओगे। मैंज्ञान का भण्डार हूँ। मनुष्य को मनुष्य मैंने बनाया है। मुनष्य पढ़ सकता है। पशु पढ़ नहीं सकते। बहुत समय पहले लोग मुझे हाथ से लिखते थे। तब मैं हस्तलिखित रूप में रहती थी। उस समय लोग मुझे लिखने में बड़ा परिश्रम करते थे। अब तो मैं छापाखानों में छपती हूँ।

- यहाँ रेखांकित शब्दों हूँ, थी, थे तथा करोगे, जाओगे से उसके होने वाले समय का पता चलता है।

'हूँ' एवं 'हैं' से वर्तमान समय का पता चलता है। (काम इस समय हो रहा है) 'थी', 'थे', से बीते हुए

समय का पता चलता है। (काम पहले हो चुका हैं)

'करोगे', 'जाओगे' से आने वाले समय का पता चलता है। (काम आगे होगा।)

**इन तीनों वाक्यों में काम के होने के समय का पता चलता है, इसे काल कहते हैं।**

## नीचे लिखे वाक्यों को पढ़े-

1. श्वेता पुस्तक पढ़ती है।
2. श्वेता ने पुस्तक पढ़ी है।
3. श्वेता पुस्तक पढ़ेगी।

पहले वाक्य से पता चलता हैं कि पढ़ने का काम इस समय हो रहा है।

दूसरे वाक्य से पता चलता है कि पढ़ने का काम बीते हुए समय में हो चुका।

तीसरे वाक्य से पता चलता है कि पढ़ने का काम आगे आने वाले समय में होगा।

अर्थात् क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

## काल के भेद

काल

| वर्तमान काल | भूतकाल | भविष्य काल |
|---|---|---|
| (सचिन पढ़ता है) | (सचिन पढ़ता था) | (सचिन पढ़ेगा) |

**प्रश्न वाक्य पूरे करो-**

- आज सोमवार है। कल ..............था। कल .......... होगा।
- आज 10 तारीख है कल.......... तारीख थी। कल ............ तरीख होंगी।
- यह वर्ष 2008 है। पिछला वर्ष................ होगा। यह वर्ष..........होगा।
- यह ..............का महीना है। पिछला महीना ................ था।

  अगला महीना............. होगा।

**प्रश्न नीचे लिखे वाक्यों को उनके लिखे काल के अनुसार बदलो-**

(क) वह कल मंदिर जाएगा (वर्तमानकाल)

(ख) सीता गाना गा रही है। (भूतकाल)

(ग) सम्राट अशोक ने युद्ध जीता (भविष्यकाल)

करके देखें–

आपने 'मैं पुस्तक हूँ' पाठ को पढ़ा, इसमें पुस्तक स्वयं के बारे में बात कर रही है। इसे आत्मकथा कहते है। क्या आप अपने आस –पास की किसी वस्तु को आधार बनाकर उसकी आत्मकथा लिख सकते हैं।

## अब करने की बारी

1. आपके घर में जो पुस्तकें हैं उन्हें देखिए यदि वे फट रही हैं तो उन्हें गोंद से जोड़िए।
2. पुस्तक के संबध में लिखी गई कविताएँ खोजिए और उन्हें बाल सभा में सुनाइए।
3. पाठ पढ़ने के बाद आप अपने शब्दों में पुस्तक की आत्मकथा लिखिए।
4. पुस्तक की आत्मकथा को नाट्य रूप में बदलिए, एवं उसे कक्षा में प्रस्तुत करिए।
5. यहाँ पुस्तक पर आत्मकथा दी गई है आप विद्यालय पर आत्मकथा लिखिए।

0